सिरके की बोतल में बुढ़िया

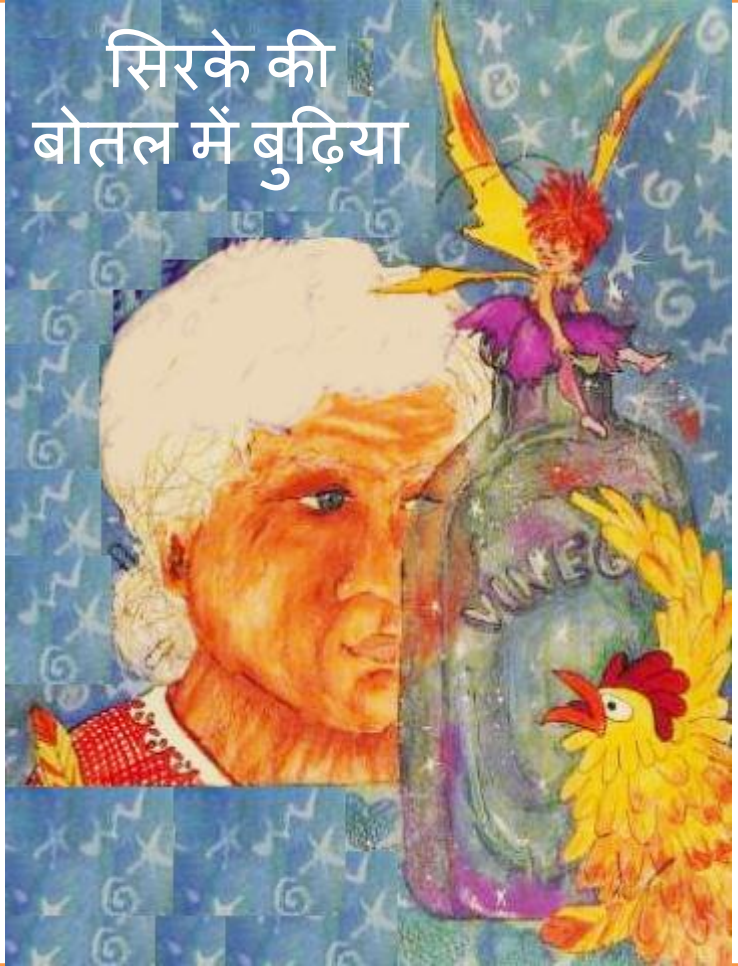

एक बूढ़ी औरत थी जो एक सिरके की बोतल में रहती थी.

ऐसा क्यों था वो मुझसे मत पूछो. वो एक साधारण पुरानी सिरके की बोतल थी. पर वो निश्चित रूप से काफी बड़ी थी. उस बोतल में बुढ़िया का छोटा सा घर था.

हर दिन बुढ़िया उसकी सीढ़ियों पर बैठती और शिकायत करती थी.

"अरे, कितने शर्म की बात है! बड़े अफ़सोस की बात है!" कि मैं इस तरह की एक छोटी सी बोतल में रहने को मज़बूर हूँ. क्यों, मुझे एक अच्छी झोपड़ी में रहना चाहिए जिसकी दीवारों पर गुलाब उगे हों. मैं ज़रूर उसके काबिल हूं."

तभी एक परी वहां से गुजर रही थी.

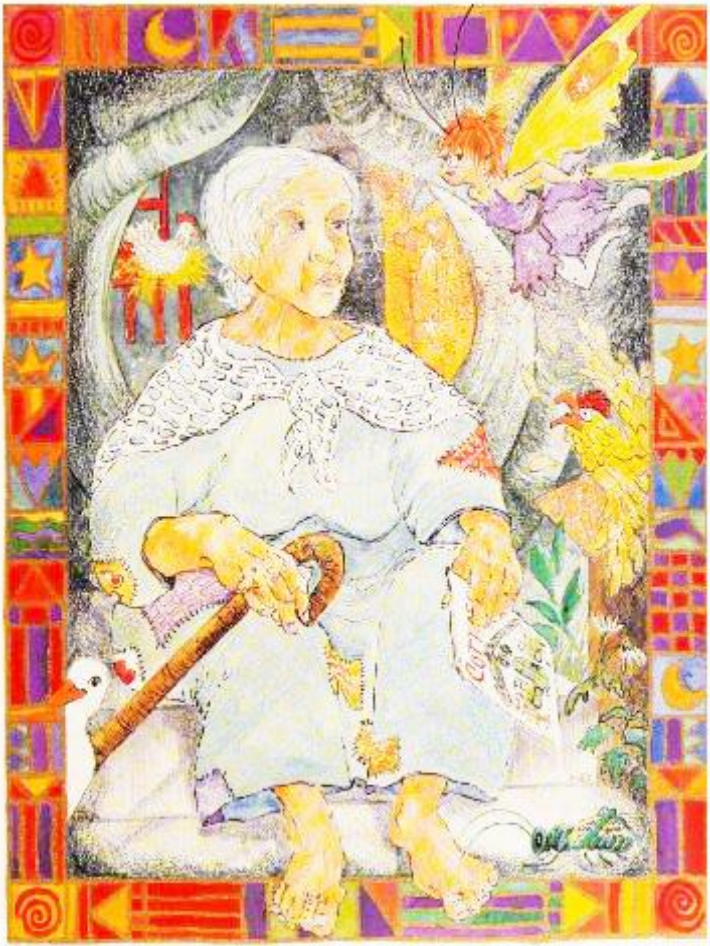

"मैं ऐसा कर सकती हूँ," परी ने सोचा. "उसकी इच्छा ज़रूर पूरी होगी."

फिर परी ने बुढ़िया से कहा.

"आज रात जब तुम बिस्तर पर सोने जाओ, तो तीन बार करवट बदलना और फिर अपनी आँखें बंद करना. सुबह तुम्हारी इच्छा ज़रूर पूरी होगी."

पहले तो बूढ़ी औरत को परी की बात पर यकीन नहीं हुआ.

लेकिन उस रात जब वो बिस्तर पर लेटी, तो उसने तीन बार करवट बदली ओर फिर अपनी आँखें बंद कीं.

सुबह, जब उसने फिर से आँखें खोलीं....

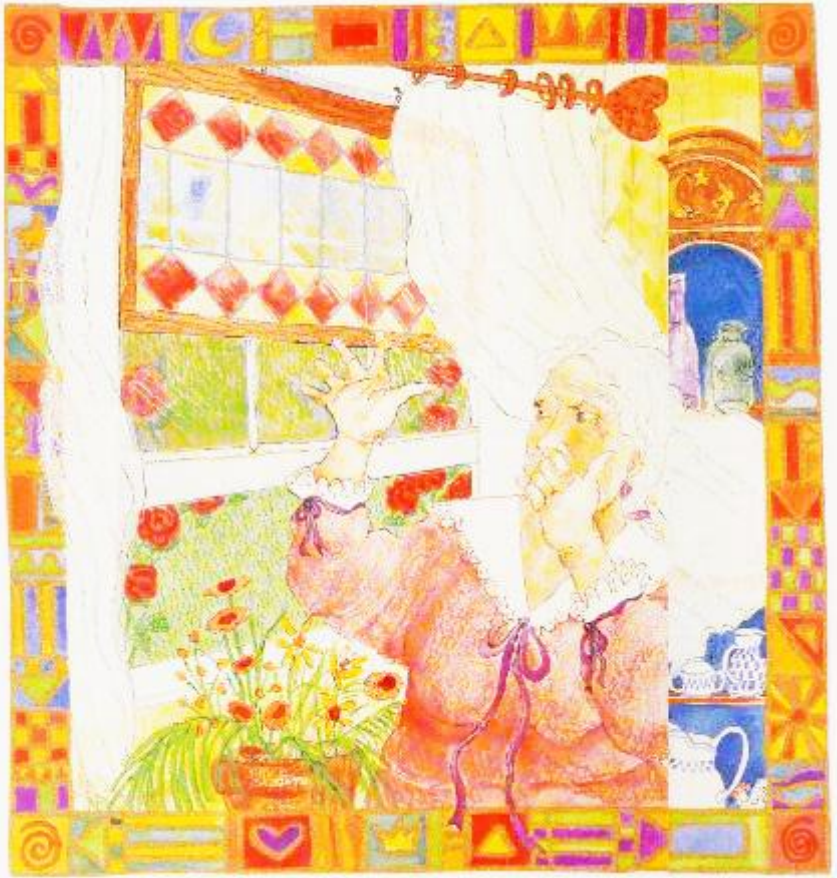

..... तो वो एक सुन्दर और प्यारी सी झोपड़ी में थी!

उसकी छत फूस की बनी थी और दीवारों पर गुलाब उगे थे!

"मैंने जो चाहा था वो मुझे मिल गया," उसने कहा. "अब मैं यहां हमेशा चैन से रहूंगी."

लेकिन बुढ़िया ने परी के लिए धन्यवाद का शब्द भी नहीं कहा.

खैर, परी उत्तर गई
परी दक्षिण गई
परी पूरब गई
और पश्चिम गई.
उसने इधर-उधर का अपना सारा काम निबटाया.

फिर परी सोचने लगी ...

"अरे उस बूढ़ी औरत का क्या हाल है?

जो कभी एक सिरके की बोतल में रहती थी."

लेकिन जब परी उसके पास गई,

तो बुढ़िया झोपड़ी में बैठकर ... शिकायत कर रही थी.

"अरे, कितनी शर्म की बात है! बड़े अफ़सोस की बात है!"

कि मैं इस तरह की एक छोटी सी झोपड़ी में रहने को मज़बूर हूँ.

क्यों, मुझे एक पक्के मकान में रहना चाहिए जिसकी खिड़कियों में झालर वाले पर्दे हों, और जिसके दरवाज़े पर चमकता हुआ पीतल का कुंडा हो."

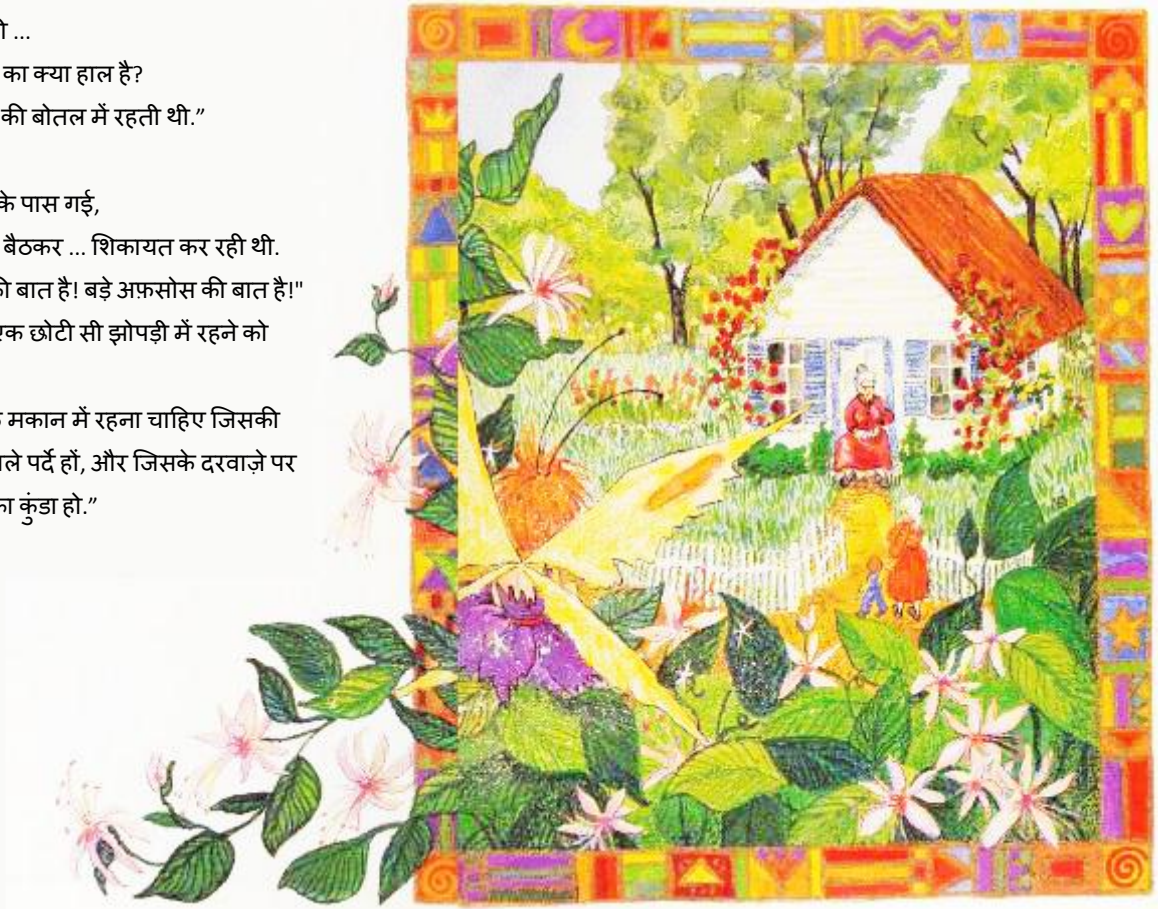

"मैं वो कर सकती हूं," परी ने सोचा.

"उसकी इच्छा ज़रूर पूरी होगी."

फिर परी ने बुढ़िया से कहा.

“आज रात जब तुम बिस्तर पर सोने जाओ, तो तीन बार करवट लेना और फिर अपनी आँखें बंद करना. सुबह तुम्हारी इच्छा ज़रूर पूरी होगी."

बूढ़ी औरत को वो बात दुबारा बताने की जरूरत नहीं थी.

वो तुरंत बिस्तर पर सोने चली गई.

वो जैसे ही बिस्तर पर लेटी, उसने तीन बार करवट ली ओर अपनी आँखें बंद कीं. सुबह, जब उसने फिर से आँखें खोलीं....

तो वो ईंटों के नए पक्के घर में थी!

घर की खिड़कियों पर झालर के पर्दे थे और दरवाजे पर पीतल का चमचमाता कुंडा था.

"मैं जो चाहती थी वो मुझे मिल गया," उसने कहा. "अब मैं यहां हमेशा चैन से रहूंगी."

लेकिन बुढ़िया ने परी के लिए धन्यवाद का एक शब्द भी नहीं कहा.

खैर, परी उत्तर गई
परी दक्षिण गई
परी पूरब गई
और पश्चिम गई.
उसने इधर-उधर का अपना सारा काम निबटाया.

फिर उसने उस बुढ़िया के बारे में सोचा.

"वो बूढ़ी औरत इन दिनों कैसी है ... वही जो सिरके की बोतल में रहती थी."

पर जब परी ईंटों वाले पक्के घर में पहुंची.
तो बुढ़िया वहां अपनी नई रॉकिंग चेयर में बैठी शिकायत कर रही थी,
"अरे, कितनी शर्म की बात है! बड़े अफ़सोस की बात है!
कि मैं इस तरह के ईंटों वाले घर में रहने को मज़बूर हूँ.
मुझे पहाड़ी पर एक हवेली में रहना चाहिए,
जहाँ बुलाते ही नौकर मेरी खिदमत में हाज़िर हों.
मैं ज़रूर उसके काबिल हूँ.”

जब परी ने यह सुना, तो वो बहुत चकित हुई. लेकिन उसने कहा.
"ठीक है, अगर उसकी यही इच्छा है ...
तो वो ज़रूर पूरी होगी."

परी ने बुढ़िया से कहा.
“आज रात जब तुम बिस्तर पर सोने जाओ, तो तीन बार करवट लेना और फिर अपनी आँखें बंद करना. सुबह तुम्हारी इच्छा ज़रूर पूरी होगी."

बुढ़िया ने तीन बार करवट ली, फिर आँखें बंद करके बिस्तर पर सो गई.
सुबह, जब उसने अपनी आँखें खोलीं ...

.....तो वो पहाड़ी के ऊपर एक हवेली में थी!

"मैं जो चाहती थी वो मुझे मिल गया," उसने कहा. "अब मैं यहां हमेशा चैन से रहूंगी."

लेकिन बुढ़िया ने परी के लिए धन्यवाद का एक शब्द भी नहीं कहा.

खैर, परी उत्तर गई

परी दक्षिण गई

परी पूरब गई

और पश्चिम गई.

उसने इधर-उधर का अपना सारा काम निबटाया.

परी को फिर से बुढ़िया की याद आई.

“अरे, वो बूढ़ी औरत अब कैसे होगी....

वही बुढ़िया जो कभी एक सिरके की बोतल में रहती थी.”

लेकिन जब परी उसके पास गई, तो बुढ़िया एक मखमल की कुर्सी पर बैठी ... शिकायत कर रही थी.

"अरे, कितनी शर्म की बात है! बड़े अफ़सोस की बात है! कि मैं इस तरह की मामूली हवेली में रहने को मज़बूर हूँ.

मुझे तो महल में रहने वाली रानी होना चाहिए था, जहाँ संगीतकार मेरा मनोरंजन करते और दरबारी मुझे सलाम करते. मैं उसके काबिल हूँ."

"हे, भगवान," परी ने सोचा. "क्या वो कभी भी संतुष्ट नहीं होगी?"

खैर, अगर वो यह चाहती है.... तो उसे वो मिलेगा."

परी ने बुढ़िया से कहा,

“आज रात जब तुम बिस्तर पर सोने जाओ, तो तीन बार करवट लेना और फिर अपनी आँखें बंद करना.

सुबह तुम्हारी इच्छा ज़रूर पूरी होगी."

बुढिया झट से बिस्तर पर लेटी

उसने तीन करवटें लीं

फिर उसने अपनी आँखें बंद कर लीं.

अगले दिन सुबह ...

वो एक महल में थी!

संगीतकार उसका मनोरंजन कर रहे थे और दरबारी उसे सलाम कर रहे थे.

"मैं जो चाहती थी वो मुझे मिल गया," उसने कहा. "अब मैं यहां हमेशा चैन से रहूंगी."

लेकिन बुढ़िया ने परी के लिए धन्यवाद का एक शब्द भी नहीं कहा.

खैर, परी उत्तर गई

परी दक्षिण गई

परी पूरब गई

और पश्चिम गई.

उसने इधर-उधर का अपना सारा काम निबटाया.

फिर वह सोचने लगी: “वो बुढ़िया कैसी होगी,
... वो जो कभी एक सिरके की बोतल में रहती थी."

लेकिन जब परी महल में पहुंची,
वो वहाँ बुढ़िया अपने सिंहासन पर बैठी थी
... और शिकायत कर रही थी.
"अरे, कितनी शर्म की बात है! बड़े अफ़सोस की बात है!
कि मैं इस तरह के मामूली महल में रहने को मज़बूर हूँ.
क्यों, मुझे तो पूरे विश्व की महारानी होना चाहिए,
ब्रह्मांड की महारानी!
मैं ज़रूर उसके काबिल हूँ."

"मुझे लगता है," परी ने
कहा. "कि कुछ लोग कभी
खुश नहीं होते.
लेकिन अगर उसकी
यही तमन्ना है, तो वो उसे
कभी **नहीं** मिलेगा!"

फिर परी ने बूढ़ी औरत से कहा,

"आज रात जब तुम बिस्तर पर सोने जाओ, तो तीन बार करवट लेना और फिर अपनी आँखें बंद करना. सुबह तुम कुछ नया देखोगी."

बुढ़िया तुरंत सोने चली गई.

उसने तीन करवटें लीं. फिर उसने अपनी आँखें बंद कीं.

जब सुबह, उसने अपनी आँखें खोलीं ...

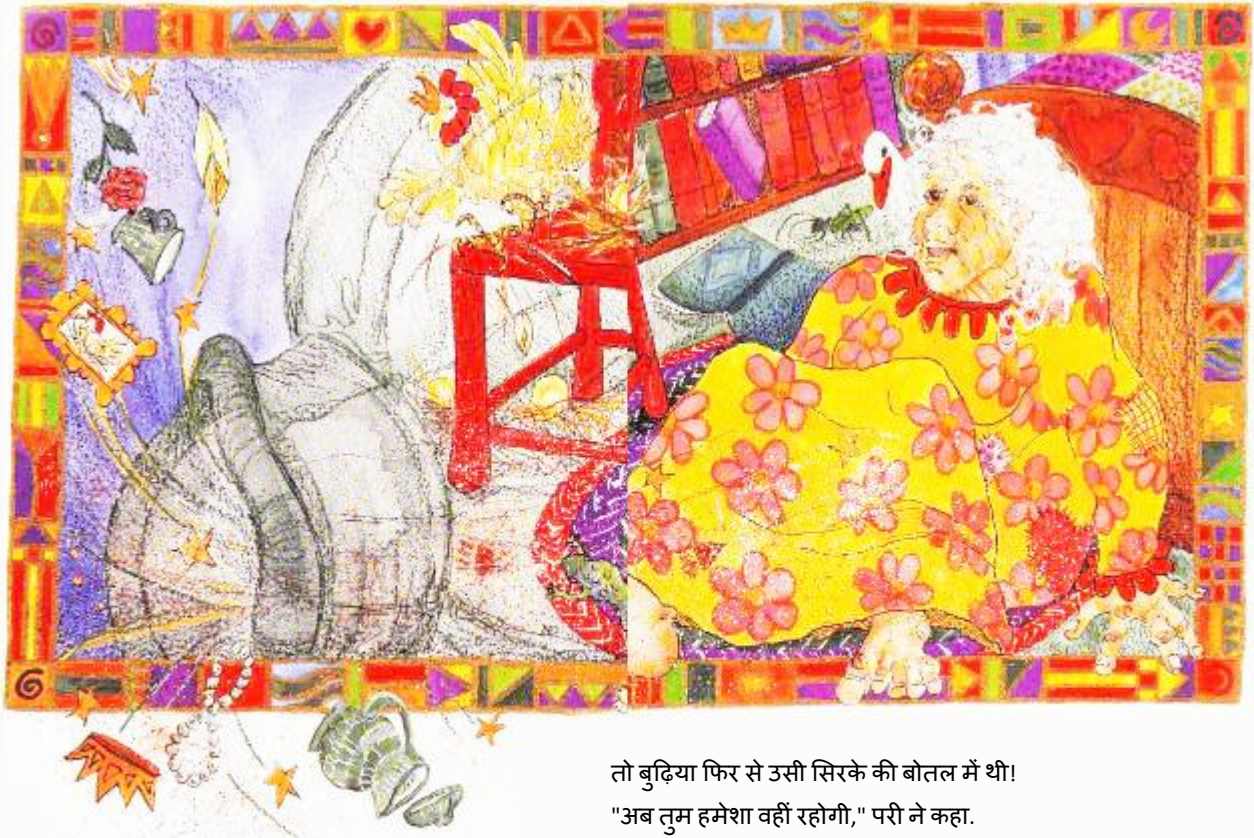

तो बुढ़िया फिर से उसी सिरके की बोतल में थी!

"अब तुम हमेशा वहीं रहोगी," परी ने कहा.

"अगर तुम यहाँ पर संतुष्ट नहीं हो, तो फिर तुम कहीं भी संतुष्ट नहीं होगी."

समाप्त

क्योंकि आखिर खुशी घर से नहीं मिलती है, ख़ुशी दिल से मिलती है.